

बच्चोंका बच्चोंका

अंक 1 वर्ष 4

अप्रैल-मई 2019



मूल्य ₹ 60

राजा गोप गुपगगम दास!

- नवीन सागर

चित्र: एलन शॉ

राजा गोप गुपगगम दास!

राजा गोप गुपगगम दास!

राजा गोप गुपगगम दास!

जल्दी-जल्दी बोलो

जल्दी-जल्दी होगे पास!

राजा गोप गुपगगम दास!



अटके अगर गुपगगम पर
 इतराओगे किस दम पर!
 बोलो, दास गुपगगम गोप
 राजा नहीं रहा अब तोप
 बोलो, दास गुपगगम गोप!
 दास गुपगगम गोप!
 दास गुपगगम गोप!



अटके अगर गुपगगम पर
 भूल जाओगे अपना घर
 चकराएगा दिन भर सर
 छोड़ो अच्छा गोप को
 छोड़ा जैसे तोप को
 बोलो सिर्फ गुपगगम दास!
 गुपगगम दास!
 गुपगगम दास!



मुश्किल है गर दास की
 सिर्फ गुपगम बोलो जी
 सिर्फ गुपगम! गुपगम!
 सिर्फ गुपगम! गुपगम!



सिर मटके तो मटके
 लेकिन जीभ न अटके
 गुपगम! गुपगम!
 हो! गुपगम! गुपगम!
 हो! गुपगम! गुपगम!



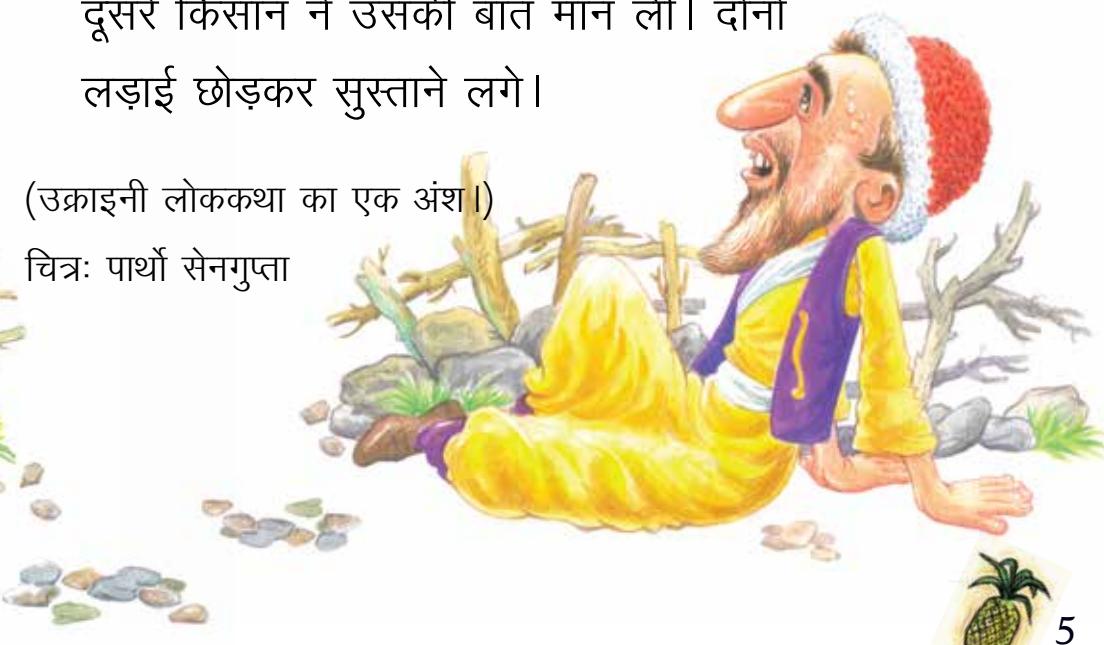
દો કિસાનોં કી લડ્દાઈ



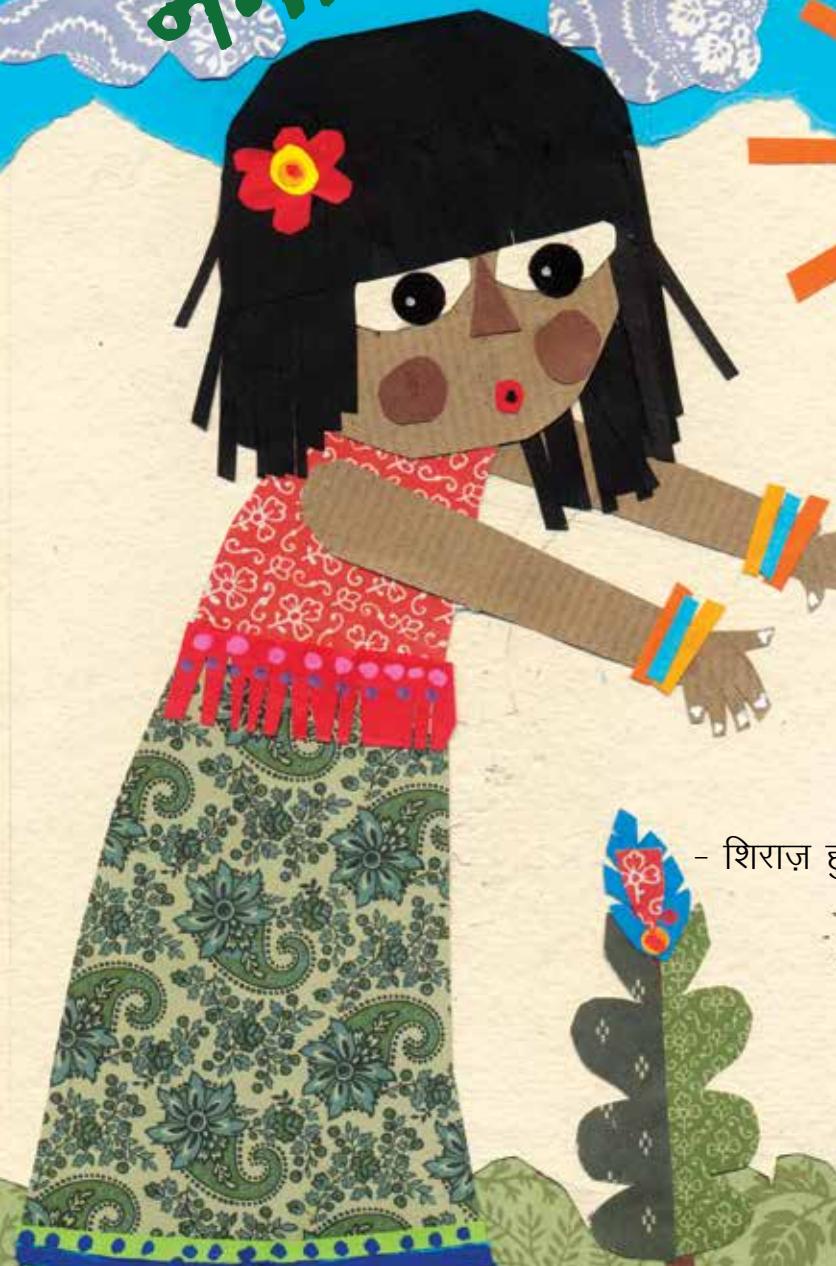
दो किसानों में लड़ाई हो रही थी। दोनों
लड़ते-लड़ते बुरी तरह थक गए थे।
तभी एक किसान ने पूछा, “सुनो, तुम्हारे पिता
थे?”
“हाँ, थे।”
“और उनके पास बैल भी थे?”
“हाँ, थे।”
“उन्हें जोतते भी थे?”
“बेशक जोतते भी थे।”
“उन्हें सुस्ताने भी देते थे?”
“हाँ, सुस्ताने भी देते थे।”
“तो फिर हम भी थोड़ा सुस्ता लें?”
दूसरे किसान ने उसकी बात मान ली। दोनों
लड़ाई छोड़कर सुस्ताने लगे।

(ઉક્રાઇની લોકકથા કા એક અંશ।)

ચિત્ર: પાર્થો સેનગુપ્તા



नमीरा के बूजे



छोटी-सी नमीरा के
चूजे छोटे-छोटे दो
हरदम उसके पीछे आते
चाहे बोले – गो गो गो

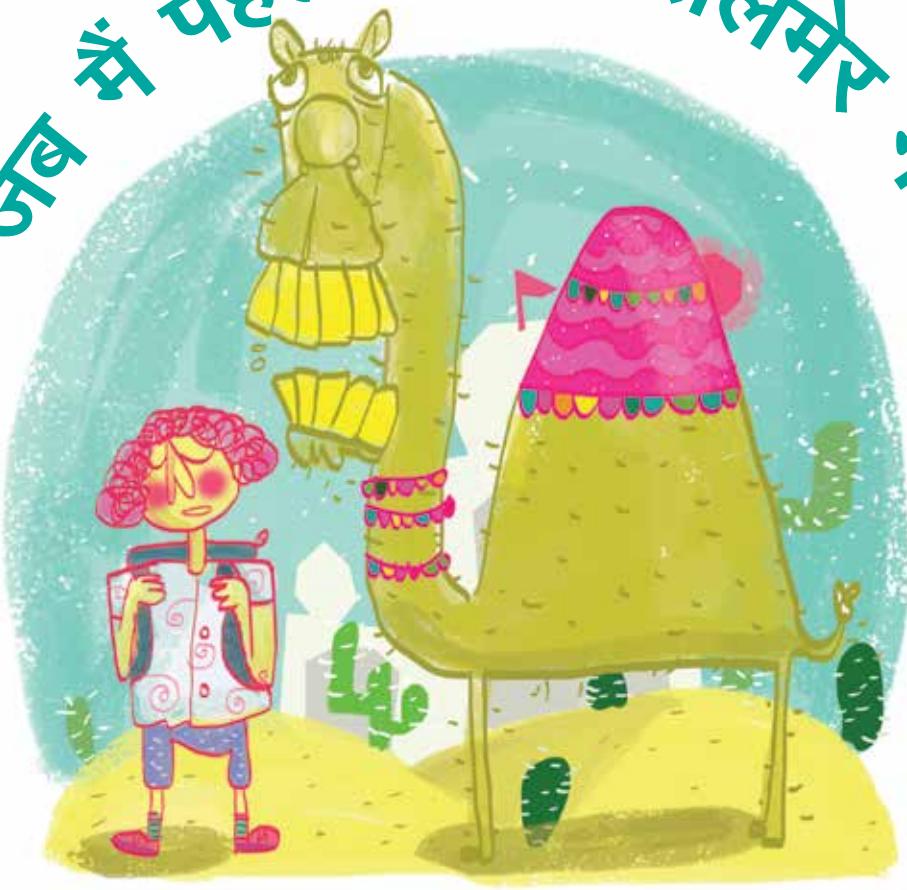
- शिराज़ हुसैन



जब मैं पहली बार जैसलमेर गई

हमारे स्कूल की ट्रिप जैसलमेर गई थी। टीचर ने बताया था कि रेगिस्तान में दूर-दूर तक रेत ही रेत होती है। जब मैं वहाँ गई तो चकरा गई। सब तरफ एक जैसा था। कहीं खो जाओ तो लौटने के लिए साइन बोर्ड भी नहीं था। वहाँ की मिट्टी मेरे बगीचे की मिट्टी से बहुत अलग थी। मुट्ठी में लो तो पानी जैसे फिसल जाती थी। वहाँ बहुत सारे ऊँट थे।

एक दिन मैं अपने ग्रुप से अलग खड़ी थी। अचानक मेरे ऊपर पानी गिरा। बारिश तो हो नहीं रही थी। तो फिर? मैंने मुड़कर देखा। एक ऊँचा-लम्बा-सा ऊँट अपनी पूँछ उठाकर खड़ा था। मेरे बाल गीले हो गए थे। मैंने सोचा, “अरे बाबा, एक्सक्यूज मी नहीं बोल सकते थे तो अपनी ऊँट की भाषा में ही आवाज़ लगा दी होती। मैं थोड़ा हट जाती।”



- रिद्म बाथला
चित्र : स्मरक राय





पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी। वापस जाने का समय हो चुका था। मैं चुपचाप बस में बैठ गई। मैं डर रही थी कि मेरे पास बैठनेवाले ने मेरे बालों से आती बदबू सूँघ ली तो? मम्मी की बहुत याद आने लगी। बाद में जब मेरे दोस्तों को पता चला तो वे हँस-हँस के पागल हो गए। तब से वो कहने लगे हैं कि मेरे बाल ऊँट की सुसु की वजह से धुँधराले हैं।

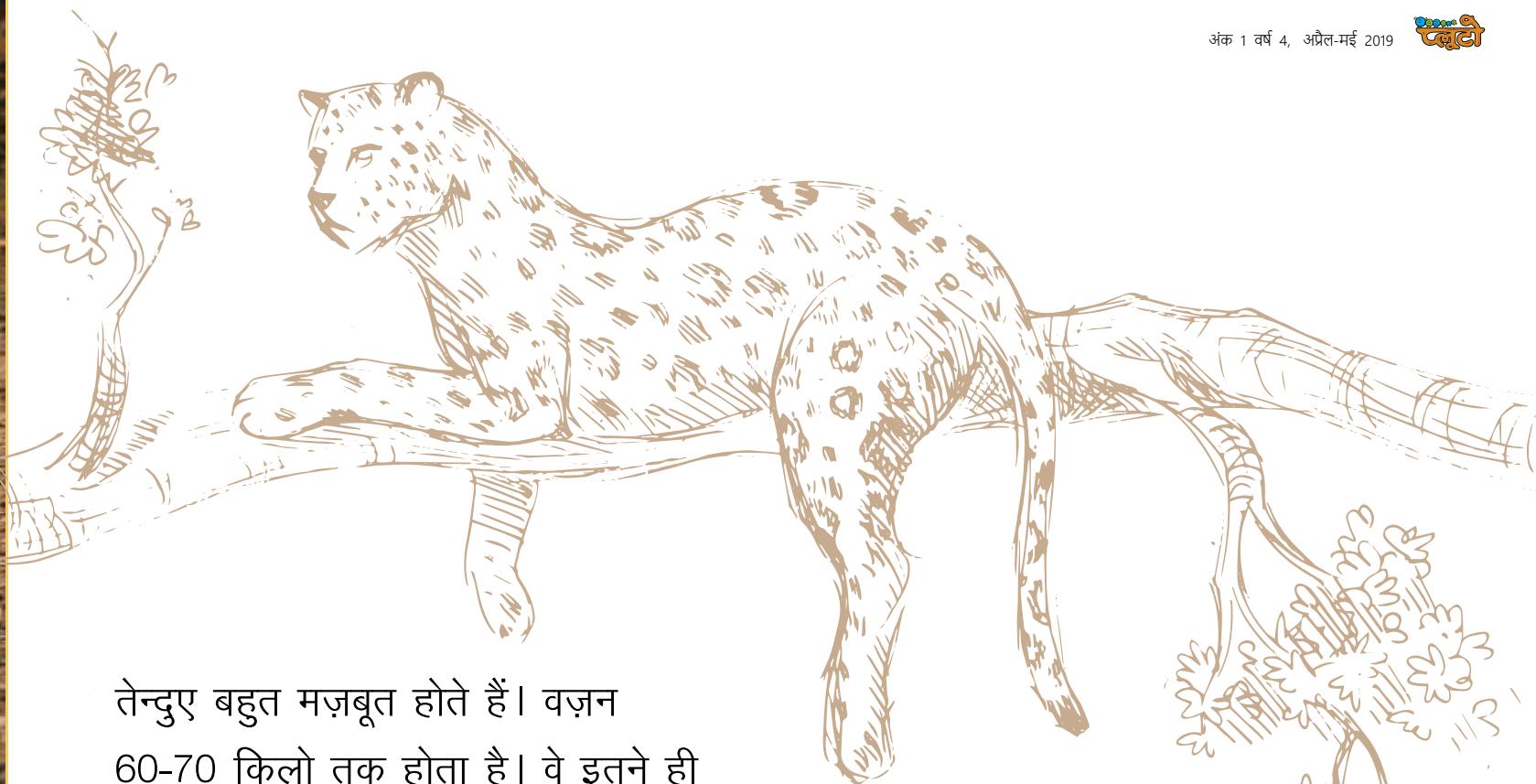


पानी पीता चौकस तेन्दुआ। (झालाना लैपर्ड कनज़रवेशन रिज़र्व, जयपुर)

फोटो: रेनू कोहली

तेन्दुए और बाघ एक-दूसरे से पंगा नहीं लेते। बाघ तेन्दुए से ज्यादा ताकतवर हैं। भिड़ेंगे तो नुकसान तेन्दुए को ज्यादा होगा। बाघ भी चोटिल हो जाएगा। इसलिए दोनों अपने-अपने इलाकों में रहते हैं। तेन्दुए बाघ की तरह दहाड़ते नहीं हैं। हल्के-से गुर्राते हैं बस।





तेन्दुओं बहुत मज़बूत होते हैं। वज़न 60-70 किलो तक होता है। वे इतने ही वज़नी शिकार को मुँह में दबाए हुए सीधे पेड़ पर चढ़ जाते हैं। वहाँ शेर या लकड़बग्धा इनके शिकार को चुरा नहीं सकते। तेन्दुओं के शरीर पर धब्बे होते हैं। जैसे हर बाघ की धारियों का पैटर्न अलग होता है, वैसे ही सभी तेन्दुओं के धब्बों का पैटर्न अलग होता है।

जंगल में जानवर हमेशा चौकस रहते हैं। वे घोड़े बेचकर नहीं सो सकते। खाते-पीते हुए भी वे आसपास का ध्यान रखे रहते हैं। जैसे, यहाँ तेन्दुआ पानी पी रहा है। पर उसकी नज़र शायद मुझ पर गड़ी हैं। मैं जो उसके सामने जीप में बैठी उसकी तस्वीर ले रही हूँ।



कौए का रुद्धाना

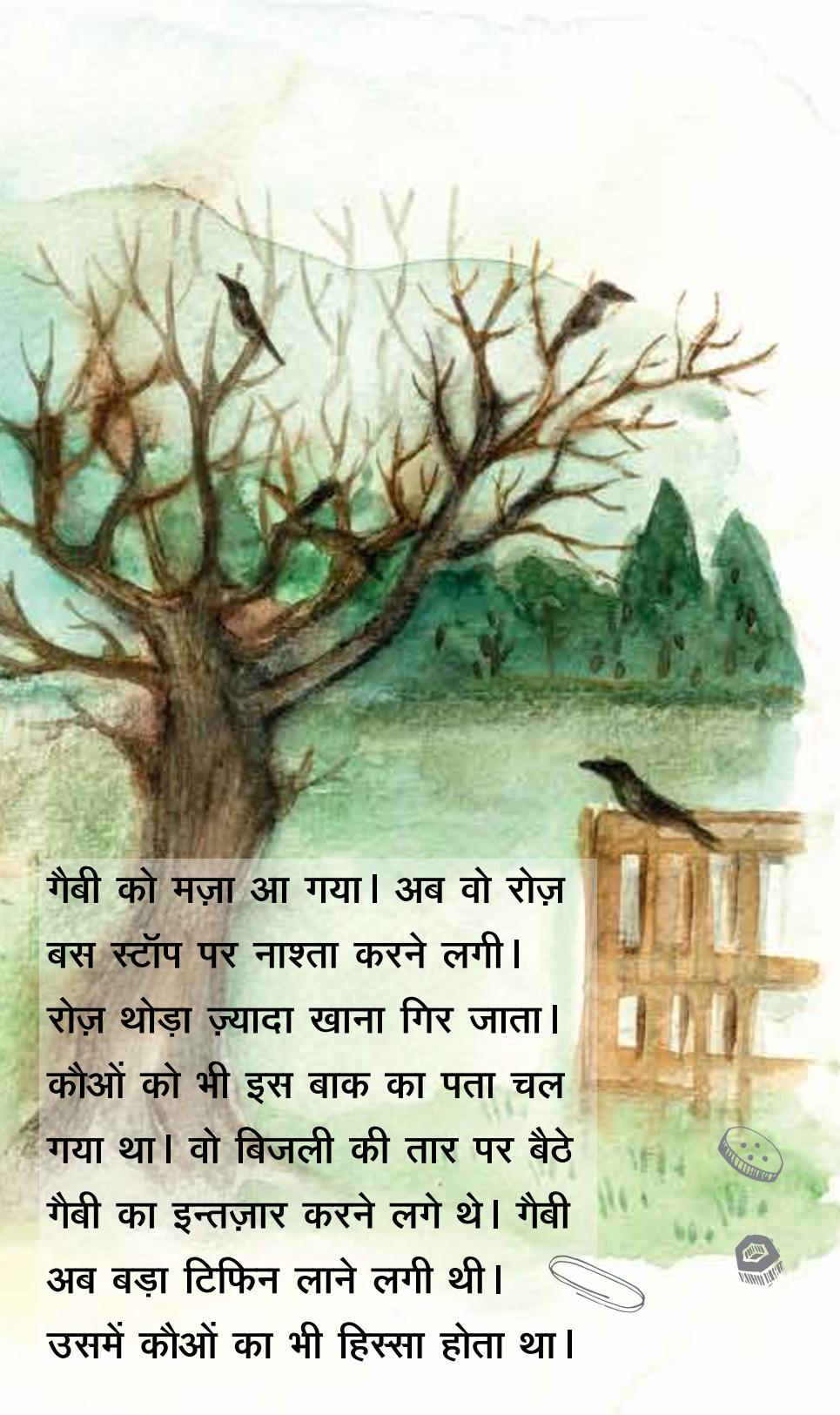
चित्र : प्रोमिति होसैन

गैबी मान को स्कूल के लिए
देर हो रही थी। उसने नाश्ता
हाथ में लिया और फटाफट
बाहर निकल गई। और
खाते-खाते स्कूल बस का
इन्तज़ार करने लगी। खाते हुए
थोड़ा खाना इधर-उधर बिखर
गया। वो उसे उठाने के लिए
झुकी तो एक कौआ उसे चोंच
में दबाकर उड़ गया।



गैबी आठ साल
की है और
सिएटल में रहती
है।





एक दिन एक कौआ अपनी चोंच में एक चमकीला कागज़ लाया। उसने गैबी के पास वो कागज़ रखा और खाना लेकर उड़ गया। धीरे-धीरे बाकी कौए भी अपनी चोंच में गैबी के लिए तोहफे लाने लगे। गैबी ने इन कीमती तोहफों को बहुत सम्भाल कर रखा है। एक काला बटन, कान की बाली, गोल पत्थर, नीली क्लिप, पीला मोती, फोम का टुकड़ा, मरा हुआ केंकड़ा...। एक बार एक कौआ प्लास्टिक का एक टुकड़ा लाया। उस पर लिखा था - बेर्स्ट। गैबी ने उसे पिरोकर गले में पहन लिया। क्या पता कौए ने “फ्रैंड” वाला टुकड़ा अपने पास रख लिया हो।

आलू

21 October 2018

धेंडा



हमारी
पना

आलू

29 December
2018

मणा



- कोंपल जैन, तीसरी, भोपाल

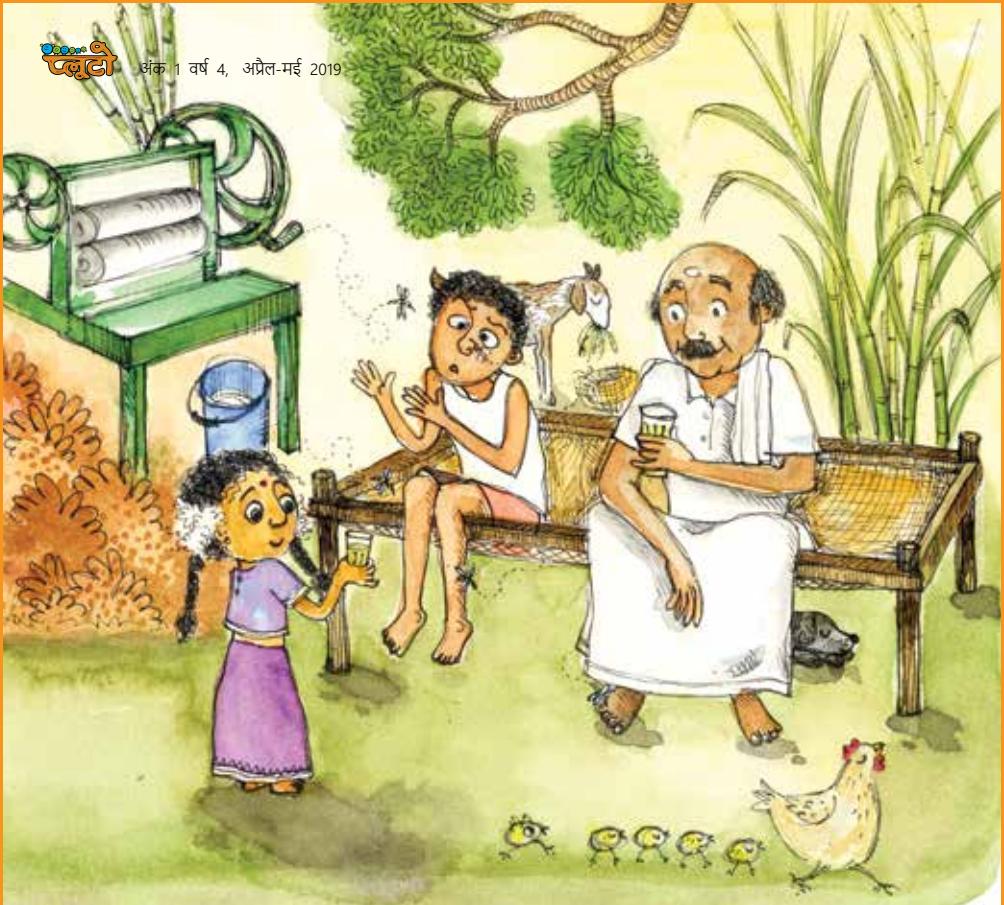


एक दिन एक कार के नीचे से आवाज़ आ रही थी। मैं अपने दोस्तों के साथ वहाँ गई। कार के नीचे कुत्ते के सात बच्चे और उनकी मम्मा बैठी थी। जब कार चली गई तो मम्मा उनको एक सूखी नाली में ले गई। उनको ठण्ड लग रही थी। मैंने एक पप्पी को अपनी फ्रॉक से ढँक दिया। फिर वो मेरे पीछे-पीछे चलने लगा। हम सारे दोस्तों ने एक-एक पप्पी को रख लिया। मेरे पप्पी को मैंने नाम दिया - आलू।

एक बार मैं खेल रही थी। आलू सड़क के पास बैठा था। इतने मैं मुझे उसके रोने की आवाज़ आई। एक लाल कार उसके ऊपर से निकल गई थी। उस कार का नम्बर था - 3357। और तारीख थी - 29 दिसम्बर 2018।

मेरा आलू





पहेलियाँ

- एक लाठी, जिसमें छिपा मीठा पानी
- उड़ते-उड़ते आए वीर, गाए गाना,
- मारे तीर
- काटो तो कटे नहीं, बाँटो तो बँटे नहीं

(इस चित्र में पहेलियों के हल छिपे हैं।)

पीला घर कौन-सा हैं?



तीन घर हैं - सफेद, लाल और पीला।
लाल घर से बाईं तरफ कोई घर नहीं है।
लाल घर से दाईं तरफ पीला घर नहीं है।



किट्टू तुम कहाँ हो?

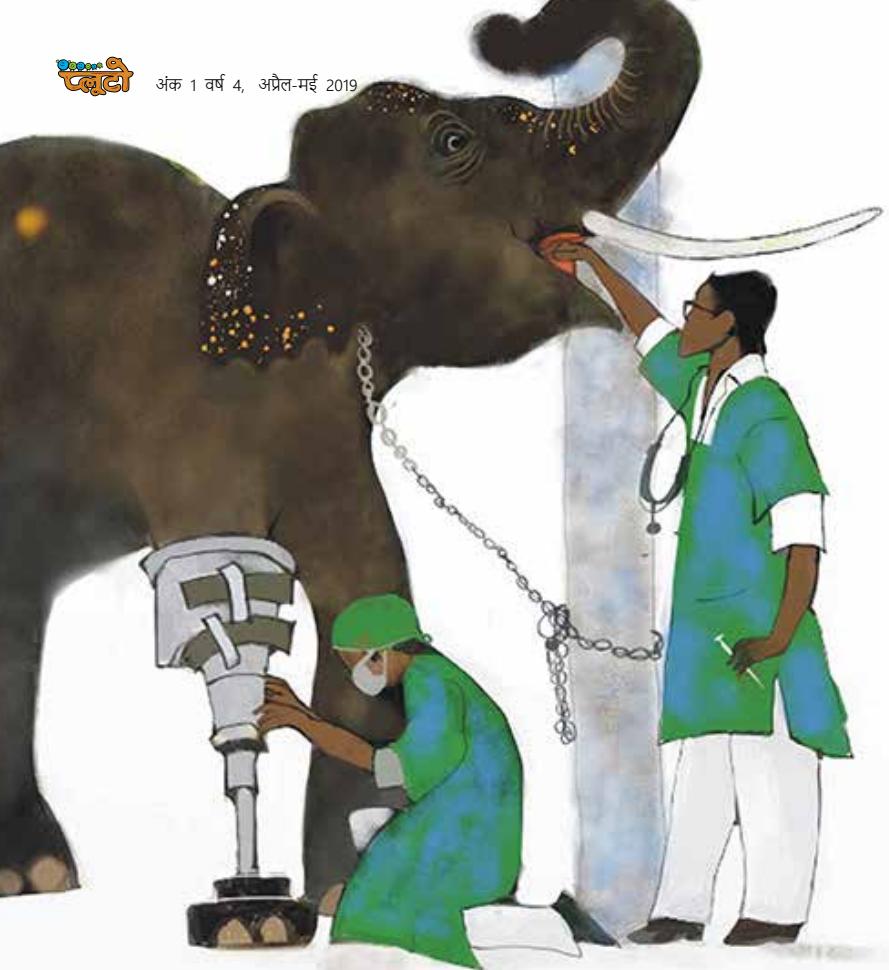
भगवान् किट्टू
को बहुत प्यार
करते थे। अब
किट्टू उनके
पास आराम से
है।



...ऐसा हो ही नहीं सकता।
किट्टू को प्रसाद गन्दा
लगता था। उसने प्रसाद
कभी नहीं खाया। वो कभी
मन्दिर भी नहीं गई। दीवाली
उसको बहुत बुरी लगती थी।
शोर से उसको बहुत डर
लगता था। फिर वो भगवान्
के पास कैसे गई!

कार्टूनः ऋषि सहानी





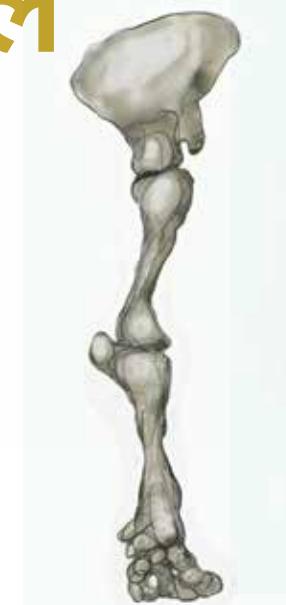
इस अस्पताल में सिर्फ हाथियों का इलाज होता है। अगर ज़रूरत पड़े तो उन्हें भर्ती कर लिया जाता है। यहाँ एक समय में दस हाथी भर्ती हो सकते हैं। सब अपने-अपने कमरों में रहते हैं। कभी-कभी हाथी अपनी सूँड से कमरे की कुण्डी भी खोल लेते हैं। दस हाथियों के लिए कितनी बड़ी जगह लगती होगी?





हाथियों का अस्पताल

- निधि गौड़
चित्र: चन्द्रमोहन कुलकर्णी

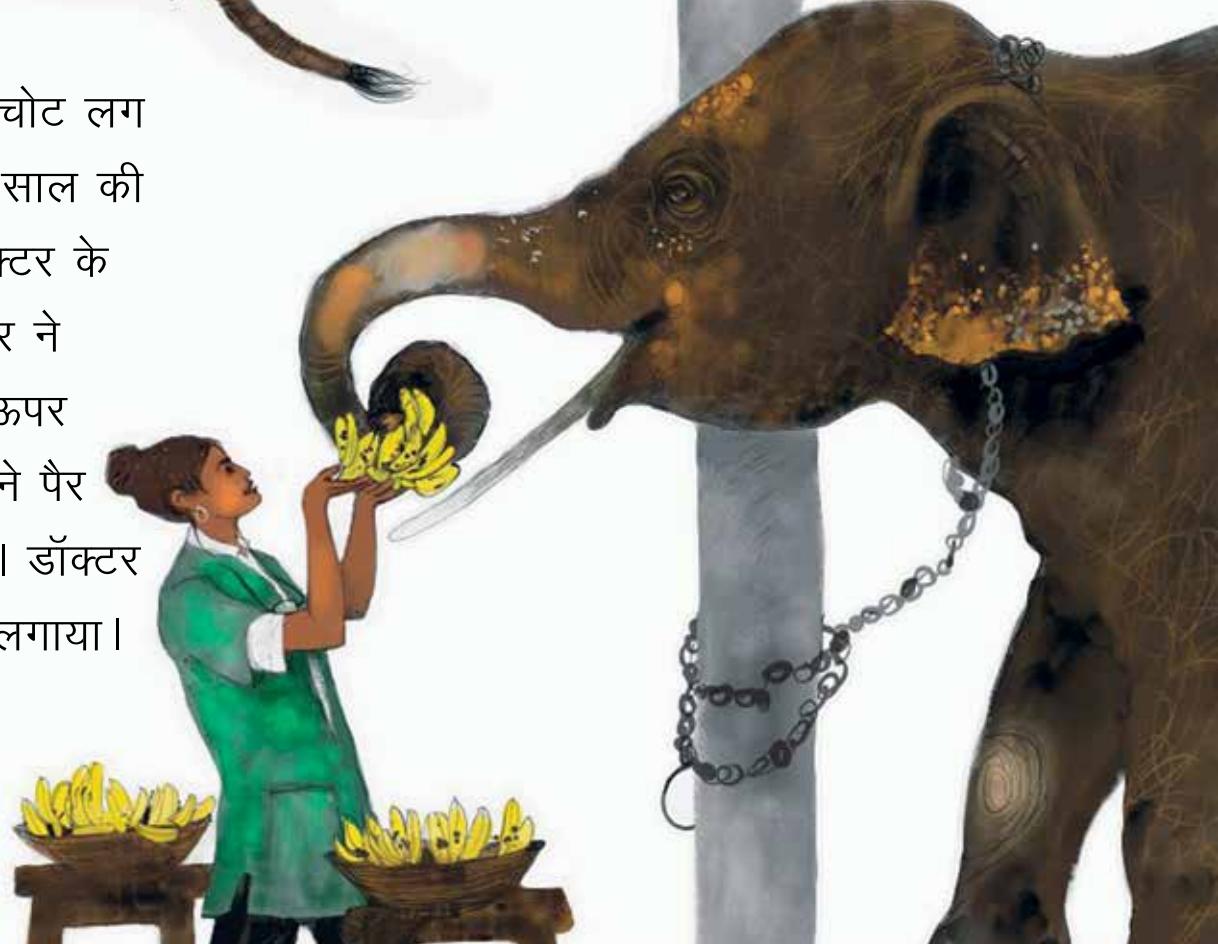


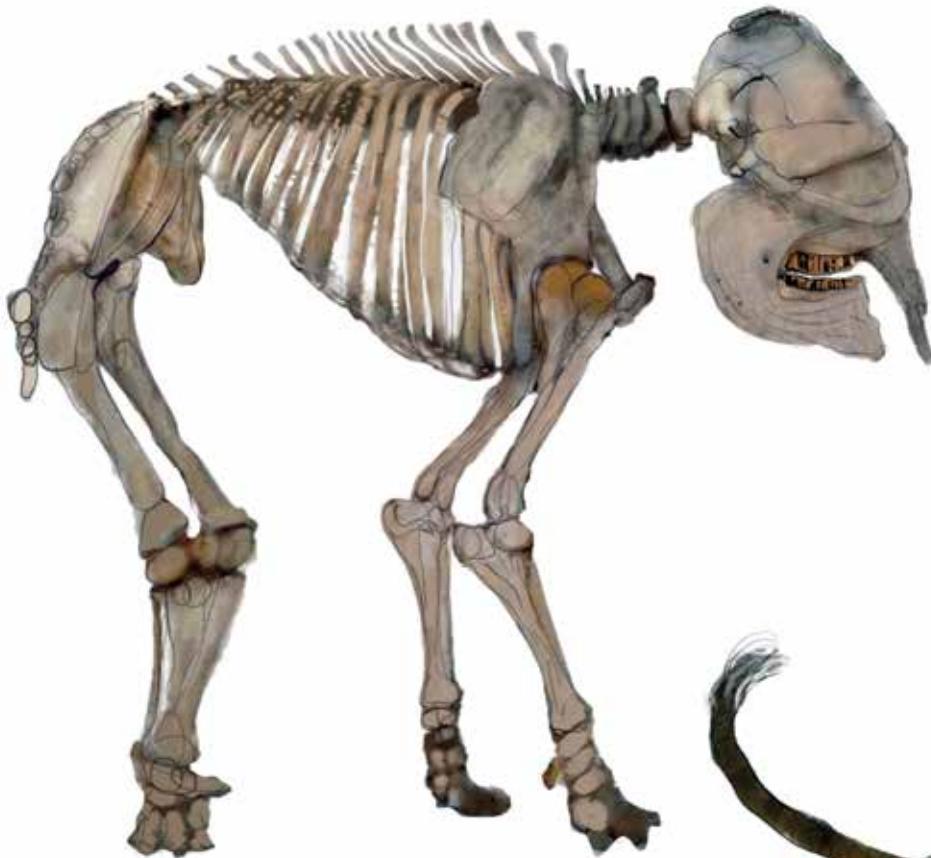
छोटी-मोटी बीमारी वाले हाथी यहाँ डॉक्टर को दिखाने आते हैं। और दवा लेकर घर चले जाते हैं। हाथी के इलाज के लिए डॉक्टर हाथी के पास जाता होगा। हाथी कितना बड़ा मुँह खोलता होगा?





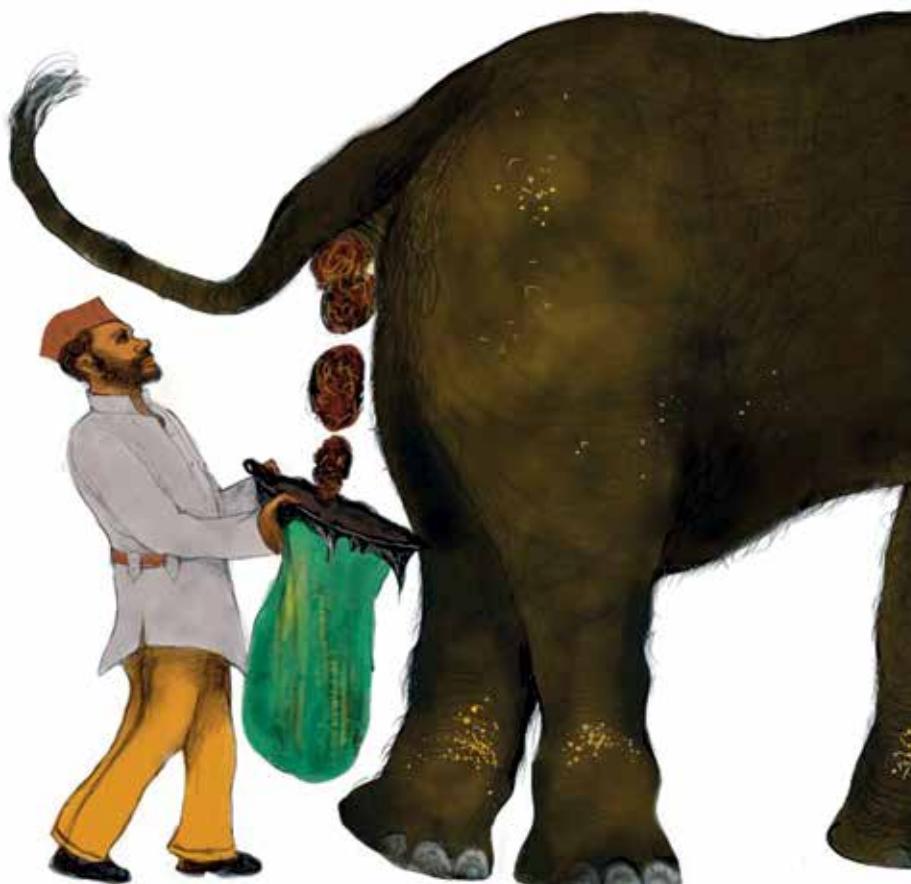
एक बार आशा को चोट लग गई थी। आशा 49 साल की हथिनी है। उसे डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने कहा, “अगला पैर ऊपर रखो।” और आशा ने पैर स्टूल पर रख दिया। डॉक्टर ने उस पर मलहम लगाया।





हाथी के दाँतों के डॉक्टर से बात
करने में मज़ा आएगा।
यह अस्पताल मथुरा के पास है।
मौका लगे तो ज़रूर जाना।

यहाँ हाथियों को जाँचने के लिए
एक्स-रे मशीनें भी हैं। हाथी की
हड्डी कितनी मोटी होती होगी?
एक हाथी दिन में 220 किलो
तक पांटी करता है। सोचो, अगर
उसका पेट खराब हो जाए तो वो
कितनी पांटी करेगा? और उसकी
पूँ...? क्या हाथियों को उसकी
बदबू आती होगी?

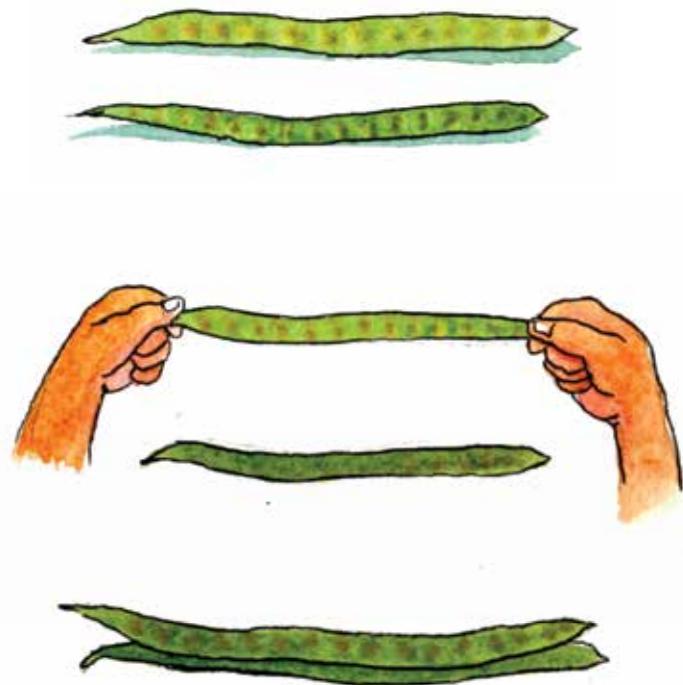




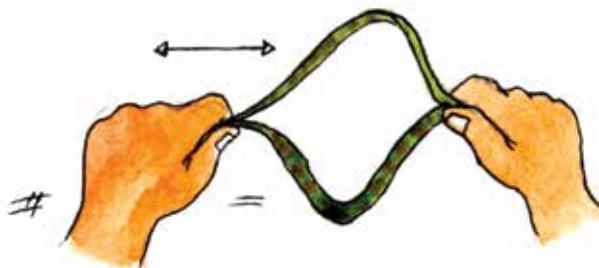
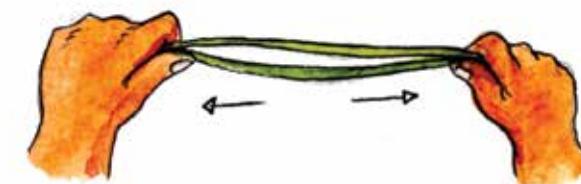
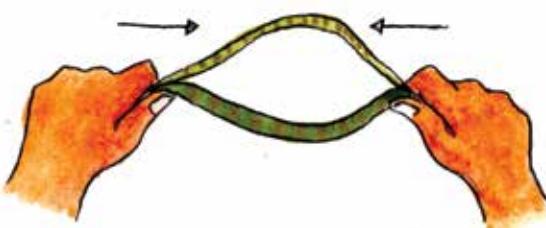
फट फट फट.....

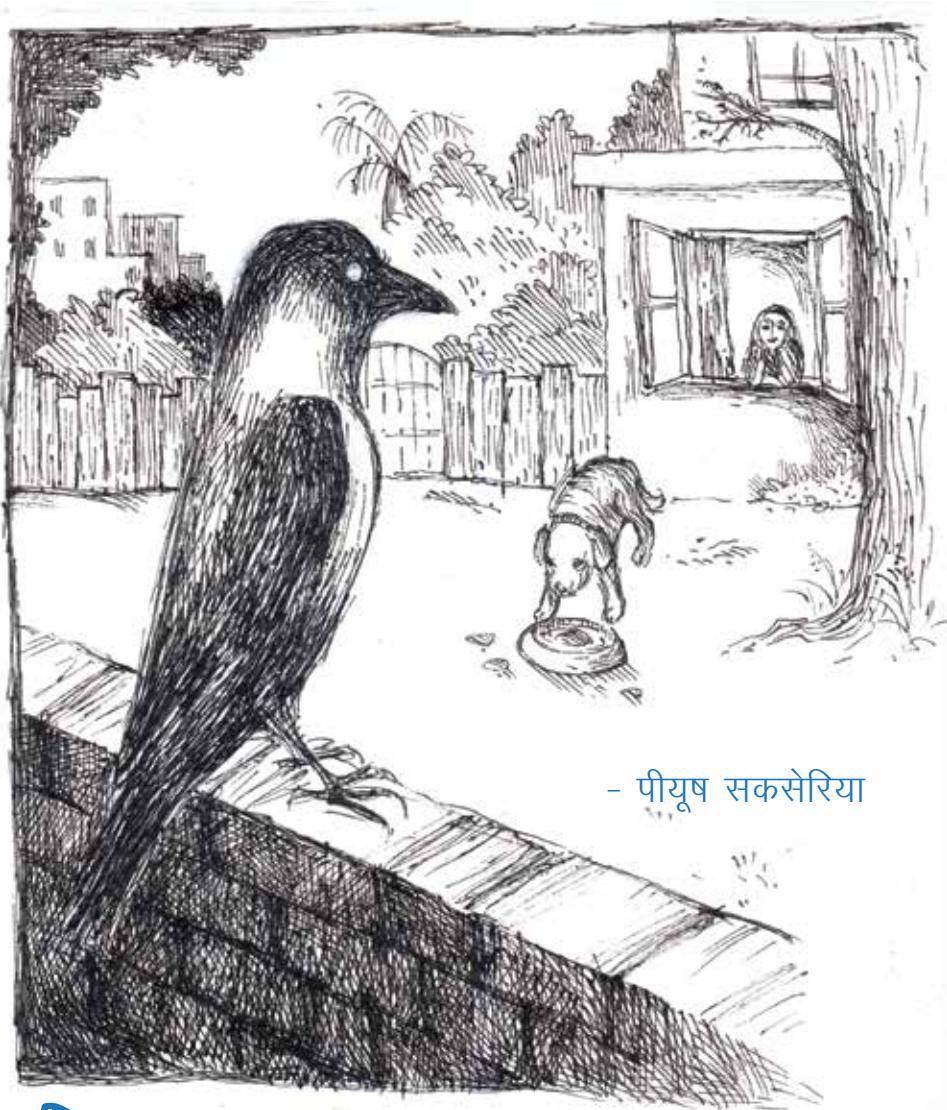


इस बाजे को बबूल की फलियों से बनाया है।
 इसे कनेर, नीलगिरी (यूकिलिप्टस) जैसी
 कड़ी पत्तियों से भी बनाया जा सकता है।
 अलग-अलग पत्तों से आवाज़ क्या एक जैसी
 आती है?



चित्र: हबीब अली





- पीयूष सकसेरिया

मैं रे घर एक कुत्ता था। उसकी रोटियाँ
पड़ी-पड़ी सूख जाती थीं।

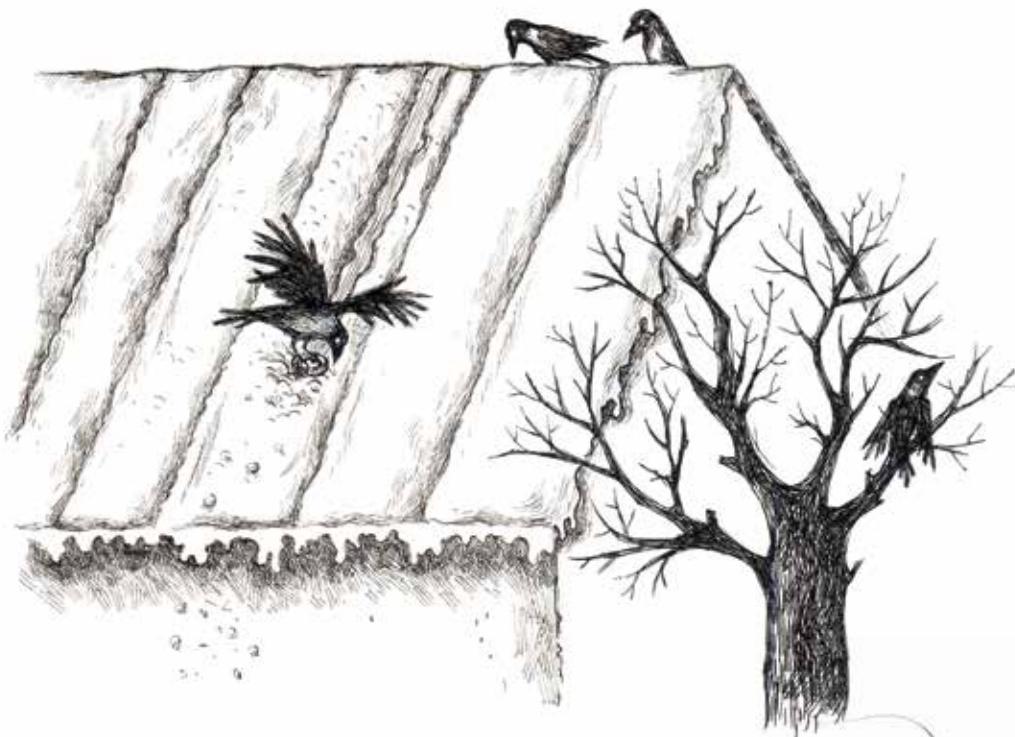
एक कौआ रोटी के टुकड़े को बगीचे में ले गया।
अपनी चोंच से ज़मीन खोदी। और रोटी को उस
गड्ढे में दबाकर मिट्टी से ढँक दिया।





. एक दिन मैंने उसे मिट्टी खोदकर रोटी निकालते देखा। उसे याद रहा कि रोटी कहाँ दबाई थी! उसने चोंच में दबी रोटी को पानी में डुबा दिया। वो मुलायम हो गई तो उसे खा गया।





. मैंने एक वीडियो में
देखा। एक कौआ बर्फ पर
फिसल रहा था। वो
फिसलते हुए नीचे आता।
फिर उड़कर ऊपर चला
जाता। फिसलपट्टी की
तरह।

एक बुलबुल पतंग के माँझे में उलझ गई¹
थी। तभी एक कौआ आया। उसने अपनी
नुकीली चोंच से धागे को काट दिया।
बुलबुल उड़ गई।



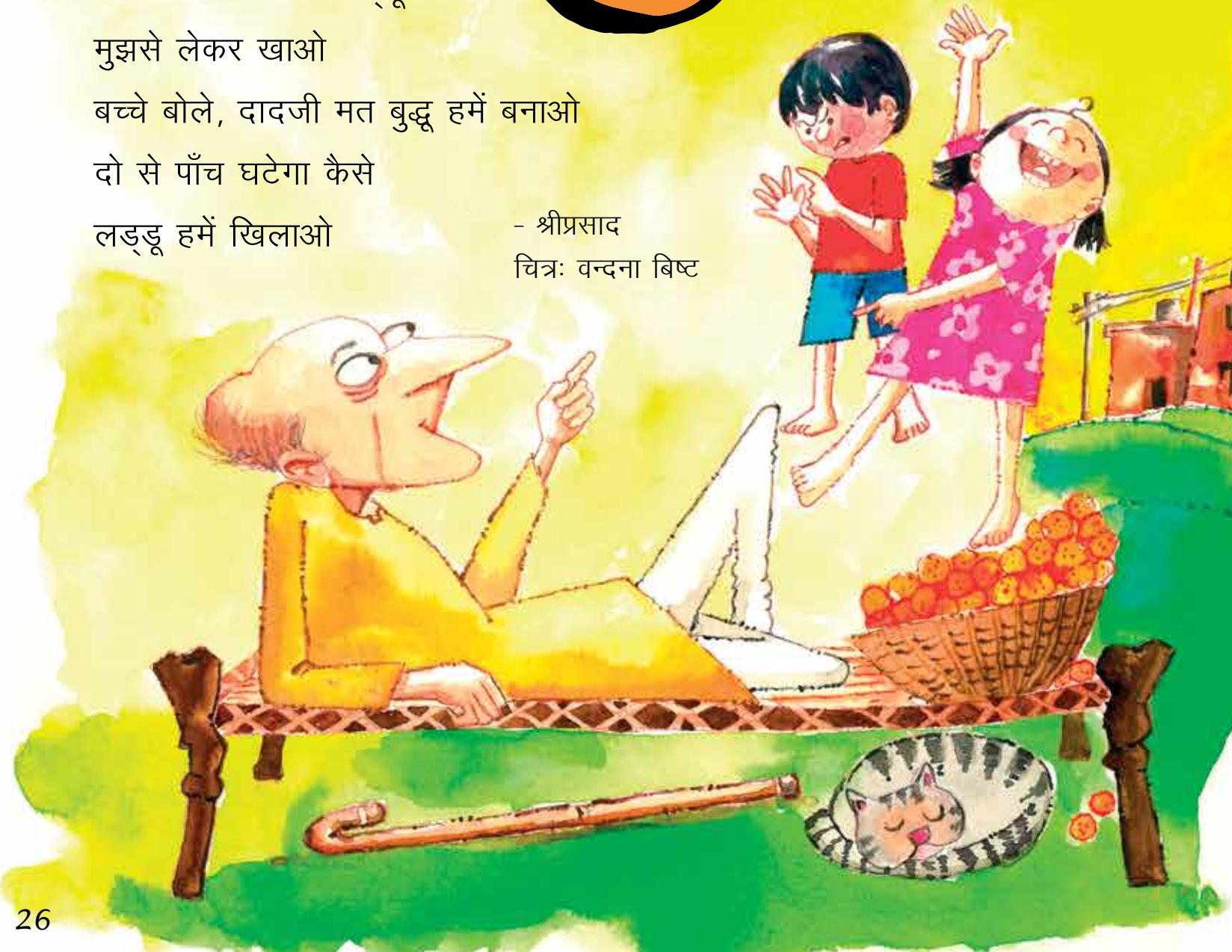
कौए कुछ चिड़ियों को परेशान भी
बहुत करते हैं। खासकर उल्लू, चील,
गिद्ध जैसे अपने से बड़े पक्षियों को।

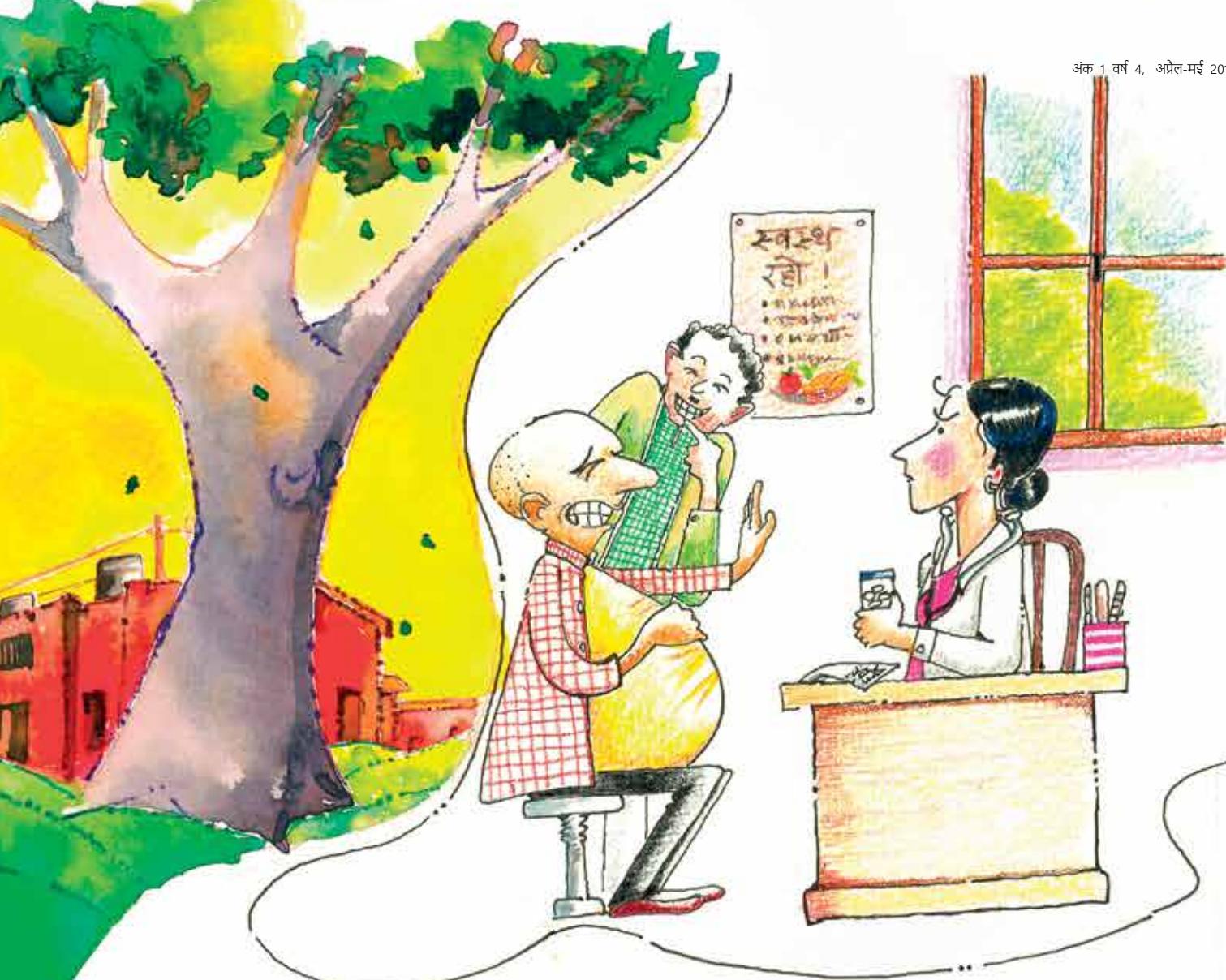


एक बार दादाजी बोले
 दो से पाँच घटाओ
 और बचे जो उतने लड्डू
 मुझसे लेकर खाओ
 बच्चे बोले, दादजी मत बुझ हमें बनाओ
 दो से पाँच घटेगा कैसे
 लड्डू हमें खिलाओ

लड्डू

- श्रीप्रसाद
 चित्रः वन्दना बिष्ट





दो लोगों में शर्त लगी। सौ लड्डू खाने की। पंडितजी ने खाना शुरू किया। एक...दो...तीन...पचास...नब्बे... वो पूरे सौ लड्डू खा लिए। तबीयत खराब हुई तो उनको डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने उन्हें गोली दी। पंडितजी बोले, “अरे, गोली की जगह होती तो क्या एक लड्डू और नहीं खा लेता?”



एक बड़ा अच्छा दोस्त



दो टी कौवी का एक दोस्त बन जाता है। दोनों बहुत खुश हैं। साथ घूमते, कहानियाँ सुनते-सुनाते हैं। पर कौवी की अम्मी चकराई हुई है। वो कहती हैं — उसके साथ कूदा-कादी मत करने लगना। उसे दीवार लाँघने के तरीके न सुझाना प्लीज़... उसके साथ-साथ पानी के अन्दर तक नहीं चले जाना।

जब कौवी को कोई फिकर नहीं, तो उसकी अम्मा क्यों दुबलाए जा रही हैं.... पढ़ो, एक बड़ी सुन्दर किताब जो ईरान से जर्मनी होती हुई भारत आई है -

एक बड़ा अच्छा दोस्त
कहानी - बाबक साबरी
चित्र - मेहरदाद ज़ायरी
कीमत - 125 रुपए

इसे मँगाने के लिए प्लूटो के पते पर लिखो या फोन करो।

आज स्कूल में अमन को चोट लग गई। मैं उसके पास गया। उसे उठाने की कोशिश की। लेकिन उसने मेरा हाथ नहीं पकड़ा। हमारी कट्टी थी। मैं बोला, “भाई उठ तो जा।” उसने मुँह बना लिया। उसे खून निकल रहा था। मैंने कहा, “चल मैडम से दवाई लगवा लेते हैं।” वो कुछ नहीं बोला। मैंने कहा, “भाई तू कट्टी ही रहना, पर चल तो दे।”

कट्टी

- राकेश कुमार मालवीय



नहीं उठेगा।

क्यों, सो रहा है क्या?

चित्रः चन्द्रमोहन कुलकर्णी



सम्पादन - सुशील शुक्ल, शशि सबलोक
डिजाइन - प्रोइक्टी रौय
आवरण चित्र - एलन शॉ

वितरण - मुदित श्रीवास्तव, अनीता शर्मा
एक प्रति - 60 रुपए (डाक खर्च अतिरिक्त)
वार्षिक सदस्यता - 425 रुपए
दो साल - 850 रुपए
तीन साल - 1275 रुपए
(पंजीकृत डाक शुल्क सहित)

भुगतान विवरण

ऑनलाइन ट्रांसफर के लिए:

HDFC बैंक, डी-23 डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
खाता नम्बर : 50100067091186

IFSC : HDFC0000134

ऑनलाइन सदस्यता की सिंक

www.ektaraindia.in/order-publications/

मुद्रक तथा प्रकाशक : संजीव कुमार द्वारा

तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी
की इकाई के लिए

मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी. एस. आई. डी. सी.,
ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेझ 1, नई दिल्ली 110020
से मुद्रित एवं सी-404, बेसमैट, डिफेंस कॉलोनी,
नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः सुशील शुक्ल**

बैंक ड्राफ्ट/चेक

तक्षशिला पब्लिकेशन (Takshila Publication) के
नाम नई दिल्ली में देय। भुगतान की पूरी जानकारी
publication@ektaraindia.in पर दें।

इकतारा - तक्षशिला का बाल साहित्य एवं कला केन्द्र

ई - 7/413 एच.आई.जी. प्रथम तल

अरेठा कॉलोनी, भोपाल - 462016

फोन - 0755 2446002, 4939472, 9109915118

ई मेल : pluto@ektaraindia.in

www.ektaraindia.in

बिट्टूजी स्कूल गए

- नरेन्द्र मौर्य



बिट्टू जी स्कूल गए
बरता घर पर भूल गए
भूल गए तो भूल गए
खूब उड़ाते धूल गए।

बैठा है कि खड़ा है
खेत में पड़ा है
गोल गोल कद्दू
कितना बड़ा है।

- अनवारे इस्लाम
चित्र: स्टीफन एटिकन

